पद १०६ (राग: परज - ताल: त्रिताल) दृष्टी न्याहाळुनी तुम्हि पाहा त्या हरिला।।ध्रु.।। दीन दयाळ असे

नाम जयाचें। तो भीमातटिं उभा। अंबऋषीचें कारण जेणें। अवतार घेतले दहा।।१।। कीर्ति वर्णितां शेषहि शिणले। न वर्णवे

ब्रह्मादिकां। भारत भागवतादि वर्णितां। न कळेचि लीला

अहा।।२।। माणिक म्हणतसे एक्या भावें। पंढरपुरासी जा।

आणिक कांहीं न लागे त्याला। तुळसी अबीर प्रेमें वाहा।।३।।